International Journal of Science and Social Science Research
ISSN: 2583-7877 Peer Reviewed & Refereed Journal
Page No: 134-141 DOI: https://doi.org/10.63671/ijsssr.v4i1.593
Volume: 4 | Issue: 1
April-June 2026

गाजियाबाद जनपद के मुरादनगर विकासखंड के प्राथमिक विद्यालयो के अध्यापकों की दृष्टिकोण में मध्याह्न भोजन योजनाः जागरूकता, दृष्टिकोण, क्रियान्वयन की समस्याएँ तथा विद्यालयी वातावरण पर प्रभाव का एक अध्ययन

सीमा देवी[1]; डॉ. प्रीति द्विवेदी[2]

[1]शोध छात्रा, समाजशास्त्र विभाग, महिला महाविद्यालय, किदवई नगर, कानपुर, इंडिया

[2]शोध निर्देशिका, एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, महिला महाविद्यालय, किदवई नगर, कानपुर, इंडिया

Corresponding Author Email: seemydv30@gmail.com

सारांश—इस अध्ययन शोध का उद्देश्य उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद जनपद के मुरादनगर विकासखंड के प्राथमिक विद्यालयो में कार्यरत अध्यापकों के मध्याह्न भोजन योजना के प्रति दृष्टिकोण जागरूकता, क्रियान्वयन, समस्याएँ, तथा विद्यालयी वतावरण पर प्रभाव का विश्लेषण किया गया है।

मध्याह्न भोजन योजना भारत सरकार की एक महत्वपूर्ण समाजिक कल्याण योजना है, जिसका मुख्य उद्देश्य प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के पोषण स्तर में सुधार करना, विद्यालयों में नामांकन एंव उपस्थिति बढ़ाना तथा समाजिक समानता को प्रोत्साहित करना है। योजना का सफल क्रियान्वयन में अध्यापकों की भूमिका अत्यतं महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे न केवल शैक्षिक गतिविधि से जुड़े होते है, बल्कि योजना के संचालन निगरानी एवं अनुशासन बनाये रखने में सक्रिय भागीदारी निभाते हैं।

इस अध्ययन शोध में गाजियाबाद जिले के मुरादनगर ब्लाक में स्थित 102 प्राथमिक विद्यालयों में से 60 को शामिल किया गया है जिनमे से 150 अध्यापकों का चयन किया गया है। शिक्षकों से साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से आकड़े एकत्रित किये गए है।अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि अधिकांश अध्यापक मध्याह्न भोजन योजना को विद्यार्थियों के स्वास्थ्य एवं विद्यालयी उपस्थति में वृद्दि के लिए उपयोगी मानते हैं। साथ ही, उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि योजना से सामाजिक समरसता का बढ़ावा मिलता हैं। हालांकि कुछ अध्यापकों ने भोजन की गुणवत्ता, स्वच्छता, समय–प्रबंधन तथा शैक्षिणिक कार्य में व्यवधान जैसी समस्याओं की ओर भी ध्यान आर्किषित किया है।

इस अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि यदि मध्यान्ह भोजन के क्रियान्वयन में प्रशासनिक सहयोग, पर्याप्त संशाधन, नियमित निरक्षण तथा अध्यापकों पर अतिरिक्त गैर–शैक्षणिक दायित्व का बोझ कम किया जाय, तो यह योजना अधिक प्रभावी रूप से अपने उद्देश्यों को प्राप्त कर सकती है। यह शोध भविष्य में निति निर्माण एवं योजना के सुधार हेतु उपयोगी सिद्ध हो सकता हैं।

मुख्य शब्दः– गाजियाबाद, नगर निगम, प्राथमिक विद्यालयों, मध्यान्ह भोजन योजना।

I. परिचय

भारत में प्राधमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण तथा बच्चों के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य से सरकार द्वारा अनेक कल्याणकारी योजनाएँ संचालित की जा रही हैं, जिनमें मध्हान्ह भोजन योजना का विशेष स्थान है। इस योजना की शुरुआत विद्यार्थियों के पोषण स्तर में सुधार, विद्यालयों में नामांकन एवं नियमित उपस्थिति बढ़ाने तथा कक्षा–कक्ष में सीखने की क्षमता को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से की गई थी। कुपोषण निर्धनता और सामाजिक असमानता जैसी समस्याओं से जूझ रहे समाज में यह योजना न केवल शैक्षिक, बल्कि सामाजिक न्याय की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। मध्यान्ह भोजन योजना का प्राभावी क्रियान्वयन विद्यालय स्तर पर अनेक कारकों पर निर्भर करता है, जनमें

International Journal of Science and Social Science Research
ISSN: 2583-7877 Peer Reviewed & Refereed Journal
Page No: 134-141 DOI: https://doi.org/10.63671/ijsssr.v4i1.593
Volume: 4 | Issue: 1
April-June 2026

अध्यापकों की भूमिका केंद्रीय है। प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापक न केवल ज्ञान के संवाहक होते हैं, बल्कि विद्यालयी प्रशासन, अनुशासन तथा विभिन्न सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन में भी उनकी सक्रिय सहभागिता रहती है। मध्यान्ह भोजन योजना के अंतर्गत भोजन की गुणवत्ता, समय पर वितरण, स्वच्छता एवं बच्चों की सहभागिता सुनिश्चित करने में अध्यापकों का दृष्टिकोण एवं सहयोग निर्णायक सिद्ध होता है। यदि अध्यापक योजना को सकारात्मक रूप से देखते हैं, तो उसका क्रियान्वयन अधिक प्रभावी एवं उद्देश्यपूर्ण होता है; वही नकारात्मक दृष्टिकोण योजना की सफलता में बाधा उत्पन्न कर सकता है। गाजियाबाद नगर–निगम क्षेत्र, तीव्र नगरीकरण वाला क्षेत्र है, जहाँ सामाजिक–आर्थिक विषमताएँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। इस क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत अधिकांश विद्यार्थी निम्न एवं मध्यम आय वर्ग से आते है, जिनके लिए मध्यान्ह भोजन योजना एक महत्वपूर्ण पोषण सहारा प्रदान करती है। नगरीय परिवेश में विद्यालयों की भौतिक सुविधाएँ, विद्यार्थियों की संख्या, प्रशासनिक दबाव तथा अध्यापकों पर पड़ने वालो अतिरिक्त दायित्व ग्रामीण क्षेत्रों से भिन्न होते हैं। ऐसे में यह आवश्यक हो जाता है कि मध्यान्ह भोजन योजना के प्रति अध्योपकों के दृष्टिकोण का वैज्ञानिक एवं वस्तुनिष्ठ अध्ययन किया जाए। इस अध्ययन में, गाजियाबाद जिले के मुरादनगर ब्लाक में स्थित प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के मध्यान्ह भोजन योजना के प्रति दृष्टिकोण का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। यह शोध न केवल योजना के सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्षो को उजागर करेगा, बल्कि उन व्याहारिक समस्याओं को भी सामने लायेगा, जिनका सामना अध्यापकों को योजना के क्रियान्वयन के दौरान करना पड़ता है। साथ ही अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष निति–निर्माताओं, शिक्षा प्राशासकों एवं विद्यालयों प्रबंधन के लिए योजना को अधिक प्रभावी, शिक्षण अनुकूल एवं छात्र केंद्रित बनाने में सहायक सिद्ध हो सकते है।

II. साहित्य समीक्षा

मध्यान्ह भोजन योजना भारत सरकार की एक प्रमुख सामाजिक एवं शैक्षिक कल्याण योजना हैं, जिसे विद्यालयी शिक्षा के साथ पोषण को जोड़ने के उद्देश्य से प्रारम्भ किया गया। इस योजना की औपाचारिक शुरुआत राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 1995 में राष्ट्रीय शिक्षा प्राथमिक पोषण सहायता कार्यक्रम के रूप में हुई थी। योजना का मुख्य उद्देश्य प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों को पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराकर कुपोषण की समस्या को कम करना, विद्यालयों में नमाकंन बढ़ना तथा ड्रॉपआउट दर को नियंत्रित करना रहा हैं (Dreze & Sen, 2013)। अनेक अध्ययनों में यह स्पष्ट किया गया है कि भूख और कुपोषण बच्चों की सीखने की क्षमता को गंभीर रूप से प्रभावित करते हैं। मध्यान्ह भोजन योजना इस समस्या का समाधान प्रस्तुत करते हुए शिक्षा को सामाजिक सुरक्षा से जोड़ती है (Khera, 2006)

शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के लागू होने के बाद इस योजना की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो गई, क्योंकि यह निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक सिद्ध हुई (Govinda, 2011)

प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था में अध्यापक सबसे महत्वपूर्ण कड़ी माने जाते हैं, क्योंकि वे बच्चों के बौद्धिक, सामाजिक और नैतिक विकास की नींव रखते हैं। अध्यापक केवल पाठ्यक्रम पढ़ाने तक सीमित नहीं होते, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण और सामाजिक मूल्यों के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं (NCERT, 2014) मध्यान्ह भोजन योजना के संदर्भ में अध्यापकों की भूमिका और भी व्यापक हो जाती है। उन्हें भोजन वितरण की निगरानी, बच्चों में अनुशासन बनाए रखने, स्वच्छता सुनिश्चित करने तथा कभी–कभी प्रशासनिक रिपोर्टिंग जैसे दायित्व भी निभाने पड़ते हैं (PROBE Report,1999)

कई शोधों में यह उल्लेख किया गया है कि अतिरिक्त गैर–शैक्षणिक कार्यभार अध्यापकों की शिक्षण–क्षमता और मानसिक संतुलन को प्रभावित कर सकता है (Kingdon, 2007)

मध्यान्ह भोजन योजना का विद्यालयी वातावरण पर प्रत्यक्ष और सकारात्मक प्रभाव देखा गया है। विभिन्न अध्ययनों से यह प्रमाणित हुआ है कि नियमित एवं संतुलित भोजन मिलने से विद्यार्थियों की उपस्थिति में वृद्धि होती है तथा कक्षा में उनकी एकाग्रता और सीखने की क्षमता में सुधार आता है (Afridi, 2010) इसके अतिरिक्त, यह योजना जाति, वर्ग और लिंग आधारित भेदभाव को कम करने में भी सहायक सिद्ध हुई है (Drèze & Goyal, 2003)

International Journal of Science and Social Science Research
ISSN: 2583-7877 Peer Reviewed & Refereed Journal
Page No: 134-141 DOI: https://doi.org/10.63671/ijsssr.v4i1.593
Volume: 4 | Issue: 1
April-June 2026

हालाँकि, कुछ अध्ययनों में यह भी सामने आया है कि भोजन वितरण के दौरान कक्षा–कार्य में व्यवधान, समय प्रबंधन की कठिनाई तथा स्वच्छता से जुड़ी समस्याएँ अध्यापकों के लिए चुनौती बन जाती हैं (Khera, 2011) इन समस्याओं के कारण कई बार अध्यापकों का दृष्टिकोण योजना के प्रति नकारात्मक हो सकता है, जो योजना की प्रभावशीलता को प्रभावित करता है।

गाजियाबाद नगर–निगम क्षेत्र उत्तर प्रदेश का एक प्रमुख शहरी एवं औद्योगिक क्षेत्र है, जहाँ तीव्र नगरीकरण के कारण जनसंख्या का दबाव लगातार बढ़ रहा है। इस क्षेत्र में बड़ी संख्या में प्रवासी श्रमिक एवं निम्न आय वर्ग के परिवार निवास करते हैं, जिनके बच्चों की शिक्षा और पोषण एक गंभीर सामाजिक चुनौती बनी हुई है (Planning Commission, 2014)।

शहरी प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों की संख्या अधिक होने, संसाधनों की सीमित उपलब्धता तथा प्रशासनिक दबाव के कारण मध्यान्ह भोजन योजना का क्रियान्वयन कई बार जटिल हो जाता है। ऐसे परिवेश में यह योजना बच्चों के दैनिक पोषण का एक महत्वपूर्ण आधार बन जाती है (Tilak, 2016)।

गाजियाबाद जैसे शहरी क्षेत्र में योजना की सफलता काफी हद तक विद्यालय स्तर पर अध्यापकों की सहभागिता और दृष्टिकोण पर निर्भर करती है।

किसी भी सार्वजनिक नीति या योजना की सफलता उसके क्रियान्वयनकर्ताओं के दृष्टिकोण पर निर्भर करती है। अध्यापक यदि मध्यान्ह भोजन योजना को विद्यार्थियों के हित में उपयोगी मानते हैं, तो वे इसके क्रियान्वयन में अधिक सक्रिय और सहयोगी भूमिका निभाते हैं (Fullan, 2007)।

वहीं, यदि अध्यापकों को यह योजना अतिरिक्त बोझ, समय की बर्बादी या शिक्षण कार्य में बाधा के रूप में प्रतीत होती है, तो योजना के उद्देश्यों की प्राप्ति प्रभावित हो सकती है (Kingdon & Muzammil, 2009)। इसलिए अध्यापकों के अनुभवों, समस्याओं और सुझावों का अध्ययन करना न केवल शैक्षिक बल्कि प्रशासनिक दृष्टि से भी अत्यंत आवश्यक है।

III. अध्ययन की आवश्यकता और महत्त्व

गाजियाबाद (नगर निगम) जिले के मुरादनगर ब्लाक में स्थित प्राथमिक विद्यालयों में मध्यान्ह भोजन योजना अध्यापकों के दृष्टिकोण, क्रियान्वयन कि समस्याएँ तथा विद्यालयी वतावरण पर प्रभाव का अध्ययन इसलिए आवश्यक है, क्योंकि शहरी परिवेश में इस योजना से जुड़ी चुनौतियाँ ग्रामीण क्षेत्रों से भिन्न होती हैं। यह अध्ययन योजना के वास्तविक क्रियान्वयन की स्थिति को समझने में सहायक होगा (Govinda & Bandyopadhyay 2010) अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष नीति–निर्माताओं, शिक्षा प्रशासकों तथा नगर–निगम प्रशासन को योजना में सुधार हेतु व्यावहारिक सुझाव प्रदान कर सकते हैं। साथ ही, यह अध्यापकों पर पड़ने वाले अतिरिक्त गैर–शैक्षणिक दायित्वों को कम करने और योजना को अधिक शिक्षण–अनुकूल बनाने की दिशा में भी उपयोगी सिद्ध होगा।

IV. अध्ययन का उद्देश्य

1. मध्याह्न भोजन योजना के प्रति शिक्षकों की जागरूकता के स्तर का अध्ययन करना।
2. मध्याह्न भोजन योजना के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण का विश्लेषण करना।
3. योजना के क्रियान्वयन में शिक्षकों द्वारा अनुभव की जाने वाली प्रमुख समस्याओं की पहचान करना।
4. मध्याह्न भोजन योजना का विद्यालयी वातावरण पर (उपस्थिति, सीखने की क्षमता, सामाजिक समरसता एवं अनुशासन) प्रभाव का मूल्यांकन करना।
5. योजना में सुधार हेतु शिक्षकों द्वारा दिए गए सुझावों का विश्लेषण करना।

IV.I. परिकल्पना

1. शिक्षकों की मध्याह्न भोजन योजना के प्रति जागरूकता का स्तर उच्च नहीं है।
2. शिक्षकों का मध्याह्न भोजन योजना के प्रति दृष्टि सकारात्मक नहीं है।
3. योजना के क्रियान्वयन में शिक्षकों को महत्वपूर्ण समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

International Journal of Science and Social Science Research
ISSN: 2583-7877 Peer Reviewed & Refereed Journal
Page No: 134-141 DOI: https://doi.org/10.63671/ijsssr.v4i1.593
Volume: 4 | Issue: 1
April-June 2026

4. मध्याह्न भोजन योजना का विद्यालयी वातावरण (उपस्थिति, सीखने की क्षमता, सामाजिक समरसता एवं अनुशासन) पर उल्लेखनीय सकारात्मक प्रभाव नहीं है।
5. योजना में सुधार हेतु शिक्षकों द्वारा दिए गए सुझाव महत्वपूर्ण रूप से प्रभावी नहीं हैं।

IV.II. अनुसंधान क्रिया विधि

इस अध्ययन में, गाजियाबाद जिले के मुरादनगर ब्लाक में स्थित प्राथमिक विद्यालयों में मध्यान्ह भोजन योजना के प्रति अध्यापकों के दृष्टिकोण, जागरुकता, क्रियान्वयन की समस्याएँ तथा विद्यालयी वतावरण पर प्रभाव का विश्लेषण किया गया हैं।

IV.III. अनुसंधान रूपरेखा

यह अध्ययन वर्णानात्मक सह–विवरणात्मक पद्धति पर आधारित हैं। इस अध्ययन पद्धति के माध्यम से शिक्षकों का मध्यान्ह भोजन योजना के प्रति जागरूकता, दृष्टिकोण, क्रियान्वयन की समास्याएँ, विद्यालयी वतारण पर प्रभाव तथा सुझावों का आकलन किया गया हैं।

IV.IV. अध्ययन का क्षेत्र

यह अध्ययन उत्तर प्रदेश के गाज़ियाबाद ज़िले के मुरादनगर ब्लॉक में स्थित 102 प्राथमिक विद्यालयों में संचालित मध्याह्न भोजन योजना पर आधारित है।

IV.V. जनसंख्या

अध्ययन की जनसंख्या में गाजियाबाद जिले के सभी सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक शामिल किये गये हैं।

IV.VI. नमूना एवं चयन विधि

- **नमूना आकार**
  इस अध्ययन में गाजियाबाद जिले के मुरादनगर ब्लॉक में स्थित 102 प्राथमिक विद्यालयों में से 60 को शामिल किया गया है, जिनमें से 150 अध्यापकों का चयन किया गया हैं।
- **नमूना चयन विधि**
  इस अध्ययन में सरल यादृच्छिक नमूना चयन विधि का उपयोग किया गया। विद्यालयों का चयन यादृच्छिक रूप से किया गया तथा प्रति विद्यालय उपलब्ध शिक्षकों से आंकड़ा एकत्रित किया गया हैं।

IV.VII. डाटा संग्रह उपकरण

इस अध्ययन में डेटा जुटाने के लिए शोधकर्ता द्वारा निर्मित 3–बिन्दु लिकर्ट स्केल पर आधारित प्रश्नावली का उपयोग किया गया।

IV.VIII. स्केल

1. सहमत
2. तटस्थ
3. असहमत

निम्नलिखित पांच आयामों पर आंकड़ा एकत्रित किया गया

- योजना के प्रति जागरूकता
- योजना के प्रति दृष्टिकोण
- क्रियान्वयन में समस्याएँ
- विद्यालयी वातावरण पर प्रभाव

International Journal of Science and Social Science Research
ISSN: 2583-7877 Peer Reviewed & Refereed Journal
Page No: 134-141 DOI: https://doi.org/10.63671/ijsssr.v4i1.593
Volume: 4 | Issue: 1
April-June 2026

- योजना में सुधार हेतु सुझाव

V. परिणाम

इस अध्ययन में कुल 150 अध्यापकों को शामिल किया गया। उनके उत्तरों का विश्लेषण तालिकाओं और प्रतिशत वितरण के माध्यम से किया गया। अध्यापकों की योजना के प्रति दृष्टिकोण को सकारात्मक, नकारात्मक और तटस्थ श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है।

तालिका 1: अध्यापकों की मध्यान्ह भोजन योजना के प्रति जागरुकता

जागरूकता का स्तर	संख्या(n)	प्रतिशत(%)
उच्च जागरूकता	95	63.3
मध्यम जागरूकता	40	26.7
कम जागरूकता	15	10.0
कुल	150	100

व्याख्याः अधिकांश अध्यापक (63.3%) मध्यान्ह भोजन योजना के उद्देश्यों और लाभों के उच्च जागरुक हैं, जो योजना के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए सकारात्मक संकेत है। केवल 10% अध्यापक कम जागरुक पाए गए, जिन्हें योजना के कार्यान्वयन में अधिक समर्थन प्रशिक्षण की आवश्यकता हो सकती है।

तालिका 2: योजना के प्रति दृष्टिकोण

दृष्टिकोण का प्रकार	संख्या(n)	प्रतिशत(%)
सकारात्मक	102	68.0
नकारात्मक	28	18.7
तटस्थ	20	13.3
कुल	150	100

व्याख्याः अधिकांश अध्यापक (68%) योजना के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं, जो यह दर्शाता है कि वे इसे बच्चों के पोषण और विद्यालयी उपस्थिति में सुधार के लिए लाभकारी मानते हैं। नकारात्मक दृष्टिकोण रखने वाले अध्यापकों का प्रतिशत 18.7% है, जो मुख्यतः भोजन वितरण में समय प्रबंधन और अतिरिक्त कार्यभार से संबंधित था।

तालिका 3: योजना के क्रियान्वयन में प्रमुख समस्याएँ

समस्या	संख्या(n)	प्रतिशत(%)

International Journal of Science and Social Science Research
ISSN: 2583-7877 Peer Reviewed & Refereed Journal
Page No: 134-141 DOI: https://doi.org/10.63671/ijsssr.v4i1.593
Volume: 4 | Issue: 1
April-June 2026

भोजन की गुणवत्ता	45	30.0
स्वच्छता और साफ सफाई	38	25.3
समय पर वितरण	32	21.3
अतिरिक्त प्रशासनिक दायित्व	20	13.3
अन्य (सामग्री की कमी आदि)	15	10.0
कुल	150	100

व्याख्या: अध्यापकों ने योजना के क्रियान्वयन में मुख्य समस्याओं के रूप में भोजन की गुणवत्ता (30%) और स्वच्छता (25.3%) को प्राथमिक माना। समय पर वितरण और अतिरिक्त प्रशासनिक जिम्मेदारियों को भी प्रमुख बाधाओं के रूप में देखा गया है।

तालिका 4: योजना का विद्यालयी वातावरण पर प्रभाव

प्रभाव का प्रकार	संख्या(n)	प्रतिशत(%)
विद्यार्थी उपस्थिति में वृध्दि	54	36.0
सीखने की क्षमता में सुधार	45	30.0
समाजिक समरसता में वृध्दि	38	25.3
कक्षा में व्यवधान	13	8.7
कुल	150	100

व्याख्या: अध्यापकों के अनुसार योजना से विद्यार्थियों की उपस्थिति (36%) और सीखने की क्षमता (30%) में स्पष्ट सुधार हुआ है। इसके अतिरिक्त (25%) अध्यापकों ने मध्यान्ह भोजन योजना की समरसता में वृद्धि देखी। इस योजना के द्वारा केवल 8.7% अध्यापक कक्षा में व्यवधान की समस्या का अनुभव कर रहे हैं।

तालिका 5: अध्यापकों द्वारा सुझाए गए सुझाव

सुझाव के प्रकार	संख्या(n)	प्रतिशत(%)
भोजन की गुणवत्ता में सुधार	45	30.0

International Journal of Science and Social Science Research
ISSN: 2583-7877 Peer Reviewed & Refereed Journal
Page No: 134-141 DOI: https://doi.org/10.63671/ijsssr.v4i1.593
Volume: 4 | Issue: 1
April-June 2026

स्वच्छता और साफ सफाई सुनिश्चित करना	38	25.3
समय पर भोजन वितरण सुनिश्चित करना	27	18.0
अतिरिक्त प्रशासनिक भार में कमी	22	14.7
अन्य (प्रशिक्षण, सामग्री प्रबंधन)	18	12.0
कुल	150	100

व्याख्या: अध्यापकों ने योजना को और प्रभावी बनाने के लिए प्रमुख रूप से गुणवत्ता (30%) और स्वच्छता (25.3%) पर सुधार की आवश्यकता बताई। समय पर वितरण और अतिरिक्त प्रशासनिक जिम्मेदारियों को कम करना भी सुझावों में शामिल था। सर्वेक्षण के परिणाम से स्पष्ट होता है कि गाजियाबाद नगर–निगम क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में अधिकांश अध्यापक मध्यान्ह भोजन योजना को बच्चों के पोषण, उपस्थिति और सामाजिक समरसता के लिए लाभकारी मानते हैं। हालांकि , योजना के कार्यान्वयन में भोजन की गुणवत्ता, स्वच्छता, समय प्रबंधन और अतिरिक्त प्रशासनिक जिम्मेदारियाँ मुख्य चुनौतियाँ हैं। अध्यापकों के सुझावों के अनुसार इन पहलुओं में सुधार करने से योजना की प्रभावशीलता और छात्रों के लिए लाभकारी परिणाम बढ़ाए जा सकते हैं।

VI. निष्कर्ष

इस अध्ययन के माध्यम से गाजियाबाद नगर–निगम क्षेत्र के मुरादनगर ब्लॉक के प्राथमिक विद्यालयों में मध्यान्ह भोजन योजना के प्रति अध्यापकों के दृष्टिकोण, जागरुकता, क्रियान्वयन की समस्याएँ तथा विद्यालयी वतावरण पर प्रभाव का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत किया गया। अध्ययन के परिणाम निम्नलिखित निष्कर्ष प्रदान करते हैं। अधिकांश अध्यापक (63.3%) मध्यान्ह भोजन योजना के उद्देश्यों और लाभों के प्रति उच्च जागरूक हैं। यह योजना के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए सकारात्मक संकेत है और दर्शाता है कि अध्यापक इसे बच्चों के पोषण और विद्यालयी उपस्थिति में सुधार के लिए उपयोगी मानते हैं। दृष्टिकोण की सकारात्मकता अध्यापकों में योजना के प्रति सकारात्मक दृ ष्टिकोण 68% पाया गया। यह स्पष्ट करता है कि योजना को लाभकारी और विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक समझा जाता है। तथापि, 18.7% अध्यापकों का दृष्टिकोण नकारात्मक था, जो मुख्यतः भोजन वितरण में समय प्रबंधन ,अतिरिक्त कार्यभार और स्वच्छता संबंधी चुनौतियों से जुड़ा था। अध्यापकों ने योजना के संचालन में प्रमुख समस्याओं के रूप में भोजन की गुणवत्ता (30%), स्वच्छता (25.3%), और समय पर वितरण (18%) को चिन्हित किया। यह संकेत देता है कि योजना के उद्देश्यों की पूर्ण प्राप्ति हेतु इन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है।

अध्ययन में पाया गया कि मध्यान्ह भोजन योजना ने विद्यार्थियों की उपस्थिति (36%) और सीखने की क्षमता (30%) में सुधार किया है। इसके अतिरिक्त, 25.3% अध्यापकों ने सामाजिक समरसता में वृद्धि देखी। केवल 8.7% अध्यापकों ने कक्षा में व्यवधान के रूप में कुछ चुनौतियों का अनुभव किया। सुधार के सुझाव अध्यापकों ने योजना को और प्रभावी बनाने के लिए भोजन की गुणवत्ता सुधारने, स्वच्छता बनाए रखने, समय पर वितरण सुनिश्चित करने और अतिरिक्त प्रशासनिक भार को कम करने की सिफारिशें दीं।

VII. सारांश

यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि गाजियाबाद जनपद के मुरादनगर विकासखंड में मध्यान्ह भोजन योजना विद्यार्थियों के पोषण, विद्यालयी उपस्थिति और सामाजिक समरसता में प्रभावी साबित हुई है। अध्यापकों का दृष्टिकोण योजना की सफलता में महत्वपूर्ण कारक है। यदि

International Journal of Science and Social Science Research
ISSN: 2583-7877 Peer Reviewed & Refereed Journal
Page No: 134-141 DOI: https://doi.org/10.63671/ijsssr.v4i1.593
Volume: 4 | Issue: 1
April-June 2026

योजना के क्रियान्वयन में भोजन की गुणवत्ता, स्वच्छता, समय प्रबंधन और अध्यापकों के अतिरिक्त बोझ पर ध्यान दिया जाए, तो यह योजना और अधिक प्रभावी रूप से अपने उद्देश्यों को प्राप्त कर सकती है।

इस अध्ययन के निष्कर्ष नीति–निर्माताओं और शिक्षा प्रशासन को योजना में सुधार करने, विद्यालय स्तर पर निगरानी मजबूत करने और अध्यापकों के योगदान को बेहतर ढंग से सुनिश्चित करने में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। इसके परिणाम से यह भी स्पष्ट होता है कि मध्यान्ह भोजन योजना केवल पोषण और शिक्षा के लिए नहीं बल्कि सामाजिक समानता और समरसता को बढ़ाने के लिए भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

संदर्भ

1. अफरीदी, एफ. (2010). बाल कल्याण कार्यक्रम और बाल पोषण, वर्ल्ड डेवलपमेंट।
2. द्रेज़, जे., एवं गोयल, ए. (2003). मिड–डे मील का भविष्यः आर्थिक एवं राजनीतिक विश्लेषण. इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली।
3. द्रेज़, जे., एवं सेन, ए. (2013). एन अन्सर्टेन ग्लो इंडिया एंड इट्स कॉन्ट्राडिक्शन्स. पेंग्विन बुक्स।
4. फुलर, एम. (2007). एजुकेशन फॉर ऑल और सुधार का नया अर्थ. टीचर्स कॉलेज प्रेस।
5. गोयला, ए. आर. (2011). कौन–सा स्कूल चुना जाता है? ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
6. गोयला, ए. आर., एवं बंद्योपाध्याय, के. (2010). भारत में प्राथमिक शिक्षा तक पहुंचः मुद्दे और चुनौतियाँ. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
7. खेड़ा, आर. (2006). प्राथमिक विद्यालयों में मिड–डे मीलः उपलब्धियाँ और चुनौतियाँ. इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 41(46), 4742-47501
8. खेड़ा, आर. (2011). भारत में मिड–डे मीलः समीक्षा और प्रमाण, सोशल चेंज, 41(3), 373-4001
9. किंगडन, जी. जी. (2007). भारत में स्कूली शिक्षाः प्रक्रिया और चुनौतियाँ, ग्लोबल पॉवर्टी रिसर्च ग्रुप, ऑक्सफोर्ड।
10. किंगडन, जी. जी., एवं मुज़म्मिल, एम. (2009). भारत में निजी विद्यालयः वृद्धि, प्रसार और प्रभाव. इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 44(17), 23-351
11. एनसीईआरटी। (2014). शिक्षक एवं विद्यालय प्रभावशीलता अध्ययन. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली।
12. योजना आयोग। (2014). बारहवीं पंचवर्षीय योजना (2012–2017). भारत सरकार।
13. प्रोब रिपोर्ट। (1999). भारत में बुनियादी शिक्षाः एक क्षेत्रीय सर्वेक्षण, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
14. स्कूल मील्स ऐज़ ए सेफ्टी नेटः भारत में मध्याह्न भोजन योजना का मूल्यांकन। (2014). इकोनॉमिक डेवलपमेंट एंड कल्चरल चेंज, 62(2), 275-3061
15. सेन, ए., एवं द्रेज़, जे. (2013). एन अन्सर्टेन ग्लोरीः इंडिया एंड इट्स कॉन्ट्राडिक्शन्स. पेंग्विन बुक्स।